# पंचम अध्याय
# भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में गांधीवादी शिक्षा-दर्शन

महात्मा गांधी को संसार के अधिकांश लोग महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। परन्तु उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। महात्मा गांधी शोषण-विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे और यह तभी हो सकता था जब समाज के सभी लोग शिक्षित हों। शिक्षा के अभाव में स्वस्थ समाज का निर्माण संभव नहीं है। अतः महात्मा गांधी ने शिक्षा के उद्देश्य एवं सिद्धान्तों की व्याख्या की। बुनियादी शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त्त रूप है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है जब उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास हो। अतः महात्मा गांधी के अनुसार "शिक्षा का अर्थ बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास करना है।"[1] वे साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाये तथा बेरोजगारी से मुक्त करे। भारतीय जीवन को ध्यान में रखते हुए महात्मा गांधी ने ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत की जिसके कार्यरूप में परिणत होने पर भारतीय समाज को एक नयी दिशा मिलती। उन्होंने अपनी शिक्षा पद्धति में बालक की रुचि के अनुसार क्रिया करके सीखने पर बल दिया। वे बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहते थे।

महात्मा गांधी ने शिक्षा का अर्थ व्यापक रूप से ग्रहण किया था। वे शिक्षा को समस्त बंधनों से मुक्ति का साधन मानते थे। जानकारी का खजाना या केवल अक्षर ज्ञान कराने वाली शिक्षा को वे अधूरी शिक्षा मानते थे। उनकी दृष्टि में शिक्षा नारी के लिए भी उतनी ही आवश्यक है जितनी कि पुरुषों के लिए। प्रचलित शिक्षा पद्धति से असंतुष्ट होकर उन्होंने 'नई तालीम' और 'बुनियादी शिक्षा' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

आधुनिक युग के प्रतिनिधि कवि भवानीप्रसाद मिश्र पर गांधी विचारधारा या दर्शन का केवल प्रभाव ही नहीं है, बल्कि गांधी विचारदर्शन उनके जीवन का अभिन्न अंश है। महात्मा गांधी के विचार स्वयं भवानीप्रसाद मिश्र के जीवन में समाहित हो गए हैं। यही कारण है कि उनकी अधिकांश कविताओं में गांधी विचारदर्शन की अभिव्यक्ति मिलती है। परन्तु गांधीवाद का कविता में रचनात्मक कायांतरण उनका उद्देश्य नहीं था। इसलिए

महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की अभिव्यक्ति सैद्धान्तिक तौर पर इनकी कविता में देखने को नहीं मिलती। फिर भी गांधी विचारदर्शन को जीवन में आत्मसात् करने के कारण प्रचलित शिक्षा पद्धति का विरोध और उनकी खामियों को उजागर करने वाले अनेक उदाहरण भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में देखे जा सकते हैं। जिनमें नई तालीम और बुनियादी शिक्षा का समर्थन तथा शिक्षा के अभाव में नारी जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण है।

## (क) नई तालीम :

बच्चों को बचपन से ही परिश्रम का गौरव सिखाने के उद्देश्य से महात्मा गांधी ने शिक्षा के क्षेत्र में नई तालीम की अवधारणा को प्रस्तुत किया। इस शिक्षा प्रणाली में उन्होंने अक्षर ज्ञान को नकारते हुए हाथ की शिक्षा या श्रम के महत्त्व की वकालत की। श्रम ही सच्ची शिक्षा है। अक्षर ज्ञान के बगैर मनुष्य का पूर्ण विकास नहीं होता है यह बिल्कुल निराधार है। यंग इंडिया में महात्मा गांधी ने लिखा है – "बच्चों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वे श्रम को हेय न समझने लगें।"[2] इसलिए यह जरूरी है कि बच्चों को आरंभ से ही श्रम की गरिमा से अवगत कराया जाना चाहिए। महात्मा गांधी जिस नई तालीम की बात करते हैं उस पर विदेशी शिक्षा पद्धति का प्रभाव नहीं है। यह भारत की परिस्थिति के अनुकूल होने के कारण मनुष्य के शरीर, बुद्धि और आत्मा में संतुलन स्थापित करने वाली है। इस प्रकार यह शिल्प, कला, स्वास्थ्य और शिक्षा का सुन्दर समन्वय है। अगर इसको सही ढंग से लागू किया जाए तो यह बेरोजगारी की समस्या के समाधान के साथ-साथ वर्ग भेद को समाप्त कर स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होगी।

शिक्षा से महात्मा गांधी का आशय न तो केवल आध्यात्मिक शिक्षा से है और न ही मृत्यु के उपरांत मोक्ष से। उनके अनुसार – "मानव जाति की सेवा के लिए उपयोगी प्रशिक्षण और बाहरी आधिपत्य की दासता और आदमी की अपनी कृत्रिम आवश्यकतों की दासता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए किया गया ज्ञानार्जन सच्ची शिक्षा है।"[3] परन्तु आधुनिक सभ्यता के प्रभावस्वरूप बदले हुए परिवेश में हम आज शुद्ध जल, शुद्ध पृथ्वी और शुद्ध वायु से अपरिचित हो गए हैं। हम आकाश और सूर्य के अपरिमेय मूल्य को नहीं पहचान पा रहे हैं। देश में प्रचलित शिक्षा पद्धति भी इस अज्ञानता का एक प्रमुख कारण है। महात्मा गांधी ने स्पष्ट कहा है – "इस ज्ञान के अर्जन के लिए न डिग्रियों की आवश्यकता है, न करोड़ों रूपयों की। इसके लिए ईश्वर में जाग्रत विश्वास चाहिए, सेवा करने का उत्साह चाहिए, पंचतत्त्वों से परिचय चाहिए और आहार विज्ञान की जानकारी चाहिए। इन्हें स्कूलों और कॉलेजों में समय बर्बाद किये बिना भी अर्जित किया जा सकता है।"[4] आदमी साक्षरता

अथवा ज्ञान अर्जन करने से आदमी नहीं बनता। सच्चे जीवन के लिए ली गई शिक्षा ही आदमी को आदमी बनाती है। महात्मा गांधी नये संसार की रचना के लिए नयी तरह की शिक्षा के हिमायती थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी नई तालीम की अवधारणा को प्रस्तुत किया। वे चाहते थे कि प्रचलित शिक्षा व्यवस्था को खत्म कर नई तालीम की व्यवस्था होनी चाहिए जिसके लिए पुस्तकीय ज्ञान होना अनिवार्य नहीं है। आधारभूत शिल्प इस शिक्षा का माध्यम है। गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र भी महात्मा गांधी विचारों के प्रभावस्वरूप प्रचलित शिक्षा पद्धति के स्थान पर भारत के पर्यावरण के अनुकूल नई तालीम के पक्षधर थे। उनका मानना था कि आधुनिक शिक्षा और ज्ञान विज्ञान सिर्फ आनन्द का आभास भर देती है। इसलिए प्रचलित शिक्षा पद्धति को त्यागकर शरीर बुद्धि और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने वाली शिक्षा अर्थात् शिक्षा की नयी पद्धति को अपनाना चाहिए –

"वह तरह
और ज्यादा नहीं बनाती तुम्हें
धरती पर रहने लायक
मैं बताऊँ
यह लिखना-पढ़ना अब ज्ञान-विज्ञान
लड़ना-भिड़ना
जरा कम कर"[5]

महात्मा गांधी ने जिस नवीन शिक्षा योजना का विचार जनता के समक्ष रखा उसमें शिक्षण विधि नवीन है। प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक एवं छात्रों में कोई सम्पर्क दिखाई नहीं देता। अध्यापक अपने विचार छात्रों के समक्ष रखता है और छात्र निष्क्रिय श्रोता के रूप में बैठे रहते हैं। इस प्रकार की दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति के विपरीत महात्मा गांधी ऐसी शिक्षा व्यवस्था लाना चाहते थे जिसमें छात्र व शिक्षक के बीच की दूरी कम हो और छात्र निष्क्रिय श्रोता न होकर सक्रिय निरीक्षणकर्त्ता एवं प्रयोगकर्त्ता हो। भवानीप्रसाद मिश्र के अनुसार "पाश्चात्य शिक्षा जिससे हमारा संबंध हुआ है, प्राणमय नहीं है। इसका भी रंग कदाचित श्वेत है किन्तु यह सफेद चूने की पुती हुई क्लासों की सफेदी है। इसकी स्थिति निष्प्राण पाठों में है जो स्कूल मास्टर के निपट निस्तेज सम्पर्क से निष्प्राणतर हो उठते हैं।"[6] वे पुस्तक के माध्यम से नहीं बल्कि हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा देने के पक्षधर थे। अपनी इस नयी पद्धति को उन्होंने नई तालीम की संज्ञा दी। इसे शिक्षा की नयी पद्धति इसलिए कहते हैं कि यह विदेशों से आयातित अथवा उनके द्वारा आरोपित नहीं है। गांधी विचारधारा से प्रेरित एवं प्रभावित होने के कारण भवानीप्रसाद मिश्र ने भी भारत में

प्रचलित शिक्षा पद्धति की कमियों का अनुभव किया। वे भी महात्मा गांधी की भाँति भारतवासियों को प्रचलित शिक्षा पद्धति से मुक्ति दिलाकर उन्हें हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा दिलाना चाहते थे। इसलिए प्रचलित शिक्षा पद्धति और उसके परिणामों को अशुभ और काला बताते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"बढ़ाये जाकर
वे बढ़ते हैं
पढ़ाये जाकर
वे पढ़ते हैं
बढ़ाये जाने
और पढ़ाये जाने के
ढंग तय हैं
निराले हैं
परिणाम जिनके
शुभ नहीं हैं
काले हैं"[7]

महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को भवानीप्रसाद मिश्र ने गहन अन्तर्दृष्टि से आत्मसात किया। यही कारण है कि प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के प्रति उनके मन में भी महात्मा गांधी की भाँति असंतोष की भावना थी। महात्मा गांधी शिक्षा को साहित्यिक बनाने के खिलाफ थे क्योंकि साहित्यिक शिक्षा व्यक्ति को हस्त कौशल से वंचित कर देती है। प्रचलित शिक्षा पद्धति से व्यक्ति का सिर्फ मन बलवान होता है, जिसके बल पर वह सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें कर सकता है। वास्तविकता के धरातल पर यह शिक्षा निरर्थक है। कोरे पढ़ने-लिखने वाले व्यक्ति श्रम के महत्त्व को नहीं समझ पाते हैं और शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे श्रम को हेयदृष्टि से देखते हैं। गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित नई तालीम को देश में लागू करवाना चाहते हैं। केवल मन को बलवान कर पढ़े लिखे जीव-जंतुओं की कतार खड़ी करने वाली प्रचलित शिक्षा पद्धति के प्रति अपना रोष प्रकट करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"लिखने-पढ़ने वालों के बलवान सिर्फ मन !
और मनों के बल भी तो संकल्पहीन हैं
x x x x
जब तक बातें करते हैं
तब तक बहार है

बातों को यदि खत्म करो
हर तरह हार है
जैसे मछली पानी के भीतर तिरती है
लिखने पढ़ने वालों की ताकत
शब्दों के पानी में है

x x x x

कोरे लिखने-पढ़ने वाले जीव-जंतुओं
तुम्हें नमन है।"[8]

ऐसे पढ़े-लिखे लोगों की स्थिति उस मछली की तरह है जो जल के भीतर तो अपनी ताकत का प्रदर्शन करती है पर जल के बाहर उसकी स्थिति दयनीय हो जाती है। यही स्थिति प्रचलित शिक्षा पद्धति द्वारा शिक्षा प्राप्त लोगों की है। उनकी ताकत भी सिर्फ भाषा और शब्द हैं। जिसके बल पर वे गोल-मटोल और आकर्षक बातें तो कर सकते हैं पर उनकी बातों का कोई प्रतिफल देश या समाज को नहीं मिलता।

प्रचलित शिक्षा पद्धति लोगों को अक्षर ज्ञान कराकर लिखना-पढ़ना सिखाती है। शिक्षा पूर्ण होने पर यह व्यवस्था छात्र को एक उपाधि थमा देती है। उपाधिप्राप्त छात्र की दृष्टि में श्रम के प्रति कहीं कोई सम्मान की भावना दिखाई नहीं पड़ती। वह श्रम को हेय समझ कर श्रम और मजदूरी करने वालों से दूरी बनाकर चलता है। महात्मा गांधी की नई तालीम को स्वीकार कर यदि उसे श्रम की गरिमा का पाठ पढ़ाया जाता तो शिक्षा खत्म करने के बाद न तो उसके लिए रोजगार का अभाव रहता और न ही श्रमिक और मजदूरों के प्रति उसके हृदय में हीनभावना रहती। प्रचलित शिक्षा पद्धति में शिक्षा प्राप्त लोग केवल सुखद जीवन के स्वप्न देखते हैं। जो वास्तविकता से टकरा कर चूर-चूर हो जाते हैं। भवानीप्रसाद मिश्र महात्मा गांधी के नई तालीम सम्बन्धी विचारों से सहमत हैं। इसलिए प्रचलित शिक्षा पद्धति की सच्चाई को उजागर करते हुए वे कहते हैं –

"जरूरत से ज्यादा पढ़ जाते हैं जो
गेहूँ के खेतों को रौंद कर बढ़ जाते हैं जो
और सिर्फ सपने देखे हैं जिन्होंने फूल के
सब चाहते हैं आँचल अनुकूल के"[9]

पाश्चात्य शिक्षा पर आधारित हमारी शिक्षा पद्धति ने व्यक्ति की मानसिकता को बदल दिया है। चरित्र निर्माण और नैतिकता का कोई मूल्य नहीं रह गया है। अक्षर ज्ञान प्राप्त सफल लोगों को हमारे समाज में सभी सुविधाएँ उपलब्ध है। समाज में इनको सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। दूसरी तरफ रात-दिन हाथों से मेहनत करने वाले कमकर,

किसान, बुनकर, सुनार, लढ़िया, लुहार की हैसियत समाज में एक श्रमिक से अधिक नहीं है। इस स्थिति का मूल कारण हमारी शिक्षा पद्धति है। इसमें विद्यार्थियों को अक्षर ज्ञान तो कराया जाता है पर श्रम के गौरव का पाठ नहीं पढ़ाया जाता। जिसके चलते अक्षर ज्ञान प्राप्त लोग सम्मान के पात्र बन जाते हैं और हाथ का काम कर रोजी कमाने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। गांधी विचारधारा के समर्थक भवानीप्रसाद मिश्र के हृदय में प्रचलित शिक्षा पद्धति के प्रति असंतोष की भावना थी। वे महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित नई तालीम के समर्थक थे। नई तालीम के प्रति अपने लगाव के कारण प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरोध का स्वर उनकी कविताओं में अनेक स्थलों पर दिखाई पड़ता है। वे कमकर, किसान, बुनकर, सुनार, लढ़िया लुहार से बढ़-चढ़कर बोलने वाले इन अक्षर-ज्ञान प्राप्त लोगों को सभी सुविधाओं से वंचित कर देना चाहते थे। महल, अटारी,वायुयान जैसी सुविधाओं का सही हकदार अक्षर ज्ञान प्राप्त व्यक्ति नहीं बल्कि हाथ का श्रम करने वाले लोग हैं। यथा –

"ऐसी सुविधा कम करो कि
कोई सिर्फ दस्तखत करता रहकर
महल अटारी मोटर टाँगें
वायुयान पर चढ़ डोले
ऐसी सुविधाएँ खत्म करो
जिससे कोई पढ़लिखकर
कमकर किसान बुनकर
लढ़िया लुहार से बढ़ बोले"[10]

महात्मा गांधी की राय में जिस देश में करोड़ों लोग गरीबी में अपना जीवन गुजारते हैं वहाँ बुद्धिपूर्वक किया जाने वाला श्रम ही सच्ची शिक्षा है। अक्षर ज्ञान हाथ की शिक्षा के बाद आना चाहिए। उन्होंने लिखा है – "हाथ से काम करने की क्षमता हस्त-कौशल ही तो वह चीज है, जो मनुष्य को पशु से अलग करती है। लिखना-पढ़ना जाने बिना मनुष्य का पूर्ण विकास नहीं हो सकता, ऐसा मानना एक वहम ही है।"[11] यह सच है कि अक्षर ज्ञान से जीवन का सौन्दर्य बढ़ जाता है, पर यह सोचना की अक्षर ज्ञान के बिना मनुष्य का नैतिक, शारीरिक और आर्थिक विकास नहीं हो सकता, सरासर गलत है। परन्तु आज हमारे समाज में प्रचलित शिक्षा पद्धति में अक्षर ज्ञान को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया जा रहा है। प्रचलित शिक्षा पद्धति में कपास उगाने, कातने और बुनने की कहीं चर्चा नहीं होती है। इस परिस्थिति को देखकर भवानीप्रसाद मिश्र चिन्तित है और अपनी 'सेवाग्राम' शीर्षक कविता में वे भरे मन से कहते हैं –

"कोई नहीं पूछता अब
मेरी मिट्टी को दवा में
मेरी उगाई कपास को शिक्षा में"[12]

भारत की अस्सी प्रतिशत आबादी की जीविका का साधन कृषि है और दस प्रतिशत लोग उद्योगों में मजदूरी कर जीवन यापन करते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षा को नितांत साहित्यिक बनाकर लड़के-लड़कियों को उत्तरजीवन में हाथ के काम के लिए अयोग्य बना देना है। जब हमारे देशवासियों का अधिकांश समय रोजी कमाने में लग जाता है तो हमें अपने बच्चों को बचपन से ही परिश्रम का गौरव सीखाना चाहिए। पुस्तकीय शिक्षा हाथ की शिक्षा के बाद शुरू होनी चाहिए। इसी उद्देश्य को सामने रखकर महात्मा गांधी ने शिक्षा के क्षेत्र में नई तालीम नामक शिक्षा पद्धति को सामने रखा जो बुद्धि, शरीर और आत्मा तीनों का विकास करती है। परन्तु हमारी प्रचलित शिक्षा प्रणाली में शिक्षा प्राप्त व्यक्ति मेहनत से डरकर दूर भागता है और काम के बहाने सड़क पर व्यर्थ घूमता रहता है। प्रचलित शिक्षा पद्धति से असंतुष्ट भवानीप्रसाद मिश्र परिश्रम से जी चुराकर काम के बहाने सड़कों पर व्यर्थ भटकने वाले नयी पीढ़ी के इन शिक्षित नौजवानों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

"आज का पढ़ा या लिखा
पढ़ता या लिखता भर है
काम का बहाना किये
सड़कों पर दिखता-भर है
आलम में डूबा हुआ
साहब या सूबा हुआ
केवल दम भरता है
और मेहनत से डरता है।"[13]

महात्मा गांधी ने नई तालीम के तहत भारतीय जीवन को ध्यान में रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत की जिसको कार्यरूप में परिणत करने से भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की सम्भावना है। हमारी प्रचलित शिक्षा व्यवस्था साहित्यिक है। इसे प्राप्त कर व्यक्ति के हृदय में श्रम के प्रति श्रद्धा कम हो जाती है। महात्मा गांधी ने नई तालीम के अन्तर्गत आधारभूत शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाने की बात कही है। पाश्चात्य शिक्षा में आत्मा को गौण समझकर मुख्य रूप से शरीर और बुद्धि पर ध्यान दिया जाता हौ। भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसका विकास तभी हो सकता है जब भारत के लोगों को हाथ के अक्षर लिखना सिखाने से पहले औजार चलाना सिखाया जाये। महात्मा गांधी के अनुयायी होने के कारण कवि भवानीप्रसाद मिश्र का भी मानना है कि

मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास अक्षर-ज्ञान से नहीं बल्कि उपयोगी दस्तकारी से होता है। नई तालीम हमारे देश के वातावरण और प्रकृति के अनुकूल है। यहाँ के लोगों के मन और हाथ दस्तकारी को अतिशीघ्र आत्मसात् कर लेते हैं। इसलिए कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"मत पकड़ाओ उन्हें
कोरे शब्द किताबों में से
निकाले हुए
उनके मन और हाथ
ठीक चीजों को पकड़ते हैं
याने अँकुरने बढ़ने
फूलने फलने वाले
बीजों को"[14]

भारत में स्वामी और दास के कृत्रिम सम्बन्धों को निभाने की नियत से पाश्चात्य शिक्षा की शुरूआत हुई थी। आदर्श की यह कमी आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली को जकड़े हुए है। आज कम-से-कम ज्ञान अर्जन करने पर परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर लेना ही सफलता का पर्याय हो गया है। 'शिक्षा की भारतीयता' शीर्षक लेख में भवानीप्रसाद मिश्र ने लिखा है, "हमारे विद्यार्थियों में भी इम्तिहान में पास होने का एक पागलपन आ समाया है। आज कम से कम ज्ञान अर्जन करने पर भी परीक्षा में अधिक से अधिक नम्बर पा लेना ही 'सफलता' हो गया है। यह सत्य के प्रति हठात उत्पन्न की गई एक अश्रद्धा है, एक दिमागी बेईमानी है, जिसके द्वारा मस्तिष्क स्वयं अपने को लूटने पर उत्साहित किया जाता है। किन्तु इसलिए कि इस धोखे में अपने को डालकर हम अपने मस्तिष्क के अस्तित्व को भूल जाते हैं, 'सफलता' का नाम सुनकर फूल उठते हैं। क्लर्क, वकील और पुलिस इन्सपेक्टर के तमगे कस लेते हैं – जवानी में हमारी मौत हो जाती है। हम आत्म हत्यारे हैं।"[15] इस शिक्षा पद्धति ने विद्यार्थियों को परीक्षा पास करने के गोरखधन्धे में डाल दिया है। ये विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि लोगों को यह बताने के लिए शिक्षा प्राप्त करता है कि वह अंग्रेजी संस्थाओं की देख-रेख में तैयार किया गया उम्मीदवार है। हमारा पढ़ा-लिखा समाज संस्कृत समाज नहीं है। महात्मा गांधी ने इस शिक्षा पद्धति की वास्तविकता को जाना था। इसलिए वे प्रचलित इस शिक्षा पद्धति को खत्म कर नई तालीम को लागू कराना चाहते थे। भवानीप्रसाद मिश्र ने भी प्रचलित पाश्चात्य शिक्षा पद्धति की कमियों का अनुभव किया। उन्होंने समाज में अनेक ऐसे शिक्षित गैरजिम्मेदार लोगों को देखा जिनका राष्ट्र,

समाज और व्यक्ति के विकास में नाममात्र का भी योगदान नहीं है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति लोगों को डिग्री प्रदान कर निकम्मा, कमजोर, निरुत्साही और नकलची बनाती है। भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी कविताओं में अनेक ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जहाँ आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति निकम्मा औक नकलची हो गया है। आलस्य और निकम्मेपन का निम्न उदाहरण देखने योग्य है –

"पढ़ा-लिखा इस जमाने
का इसलिए भी
देर तक सोता है
सुविधा है पढ़े-लिखे को
जब चाहे सोने की
जब चाहे उठने की"[16]

इतना ही नहीं आधुनिक शिक्षा प्राप्त ऐसा व्यक्ति देश और समाज के लिए किसी काम का नहीं। ऐसे शिक्षित व्यक्ति की तुलना भवानीप्रसाद मिश्र चीड़ के उस पेड़ से करते हैं जो वन में हजारों की संख्या में होकर भी अलग और अकेला होता है। वनों को ऐसे पेड़ों के रहने और न रहने से कोई फर्क नहीं पड़ता। ठीक यही स्थिति पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से शिक्षित व्यक्ति की है जिसका पढ़ा-लिखा होना न पढ़ा-लिखा होने के समान है –

"चीड़ वन में हजारों में से
हर चीड़ का पेड़
आखिरकार वन का होकर भी
अलग और एक होता है
हमारा पढ़ा-लिखा
इस तरह अकेले में भी
न पढ़ा लिखा होना है
न नेक वह
निरर्थक किसी एक
बहाव का सोता है
या कहिए एक रात है वह
जिसमें दिन भर का धुआँ भरा है"[17]

निष्कर्षतः महात्मा गांधी ज्ञान और आनन्द का आभास भर देकर श्रम के प्रति वितृष्णा का भाव जगाने वाली प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरोधी थे। इसके स्थान पर उन्होंने विदेशी प्रभाव से मुक्त और भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल श्रम की गरिमा का

पाठ पढ़ाने वाली नई तालीम की अवधारणा को प्रस्तुत किया। यह बेरोजगारी की समस्या का स्थायी समाधान और वर्गभेद को खत्म कर स्वस्थ समाज का निर्माण करती है। गांधीवादी कवि के रूप में ख्यात भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ गांधी वातावरण और परिवेश से सीधा सम्बन्ध रखती है। इसलिए महात्मा गांधी के विचारों के प्रभावस्वरूप भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरोध के माध्यम से शिक्षा की नयी पद्धति नई तालीम के समर्थन का स्वर सुनाई पड़ता है। भवानीप्रसाद मिश्र भारतवासियों को दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति से मुक्ति दिलाकर हस्तकौशल के माध्यम से शिक्षा दिलाना चाहते हैं, क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अक्षर ज्ञान तो कराया जाता है पर श्रम के गौरव का पाठ नहीं पढ़ाया जाता। इसमें कपास उगाने, कातने और बुनने की कहीं चर्चा नहीं होती। भवानीप्रसाद मिश्र का मानना है कि मानव मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास अक्षर ज्ञान से नहीं बल्कि उपयोगी दस्तकारी से होता है।

## (ख) बुनियादी शिक्षा :

किसी उद्योग या हस्तकला को बुनियाद बनाकर दस्तकारी के माध्यम से बच्चों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य है। यह शैक्षणिक दृष्टि से सही होने के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से भी उपयुक्त सिद्ध होगी। इसकी विशेषता यह है कि यह उद्योग की शिक्षा न होकर उद्योग द्वारा शिक्षा होती है। इसमें कताई, बुनाई, खेती, बागवानी के माध्यम से बच्चों को भाषा, इतिहास, भूगोल, गणित आदि विषयों का सच्चा और उपयोगी ज्ञान कराकर उनके भविष्य की बुनियाद रखी जाती है। यह शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में बच्चों को शिक्षा देती है। जिससे यह हिन्दुस्तान के तमाम बच्चों को, हिन्दुस्तान के सभी श्रेष्ठ और स्थायी तत्त्वों के साथ जोड़ देती है। इसका पाठ्यक्रम बच्चों की योग्यता एवं रुचि को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है ताकि उन्हें आदर्श व्यक्ति बनाया जा सके। बुनियादी शिक्षा एक साथ बालक के मन और शरीर का विकास करके उसे उसके वतन से जोड़ती है। नागरिकता के गुण विकसित करने वाली यह सर्वोत्तम शिक्षा बचपन में ही बालक को अपने और देश के भविष्य का गौरवपूर्ण चित्र दिखाकर देश निर्माण में हाथ बंटाने के लिए प्रेरित करती है।

भवानीप्रसाद मिश्र घोषित तौर पर गांधीवादी कवि हैं। उनकी काव्य संवेदना गांधीवादी विचारदर्शन से परिचालित है। उन्हें लगता है कि अपने युग के दिशाहीन और पतनोन्मुख समाज को महात्मा गांधी के आदर्शों पर चलाकर ही बचाया जा सकता है। पतन की ओर उन्मुख दिशाहीन भारतीय समाज का एक प्रमुख कारण है प्रचलित शिक्षा पद्धति जो हमें हमारी संस्कृति से दूर करती है। शिक्षा को संस्कृति से जोड़ने के लिए महात्मा गांधी ने अपनी बुनियादी शिक्षा प्रणाली के तहत भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में बच्चों को शिक्षा देने की बात कही है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से श्रम के महत्त्व को स्वीकार किया

गया है। महात्मा गांधी तो उस मनुष्य को मनुष्य मानने से ही इनकार करते हैं जो अपना पेट पालने के लिए श्रम नहीं करता। प्रचलित शिक्षा पद्धति भी केवल पढ़े-लिखे युवाओं की फौज तैयार करती है जो शिक्षा प्राप्त कर मेहनत से जी चुराता है। महात्मा गांधी ने अपनी बुनियादी शिक्षा प्रणाली के तहत प्रारम्भ से ही बच्चों को कताई और बुनाई की शिक्षा देने की बात कही ताकि बच्चों के हृदय में बचपन से ही श्रम के प्रति श्रद्धा का भाव जाग्रत किया जा सके। श्रम के प्रति श्रद्धा का भाव जाग्रत करके ही हम अपनी संस्कृति को बचा सकते हैं। भवानीप्रसाद मिश्र का मानना है कि शिक्षित व्यक्ति को समाज में सभ्य और संस्कृत माना जाता है परन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त व्यक्ति तो संस्कृति के लिए संकट पैदा कर मानव के जीवन में जहर घोलता है। अपनी इन्हीं भावनाओं को व्यक्त करते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"इसलिए तो हम लिखते हैं
इसलिए तो हम पढ़ते हैं
जहर पिला-पिलाकर
समूची संस्कृतियों को
हम प्रतिष्ठा में बढ़ते हैं
x x x x
हम ठहरे बैठे-ठाले
पढ़े-सुने हमको बैठे रहने वाले
अगर तुम हमारे इस बार के
जहर से बच जाओ
तो तुम्हें कसम है
अपने कातने-बुनने की
जो तुम हमारे पास आओ!"[18]

समाज की पूर्णता लोगों के चरित्र पर आश्रित है, अतः महात्मा गांधी चरित्र निर्माण को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य मानते हैं। उनका मानना है कि व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता, ठोस शिक्षा के निर्माण के लिए अनिवार्य है। अतः विद्यार्थियों को अपने व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता का ध्यान रखना है। अर्थात् सच्ची शिक्षा साहित्यिक प्रशिक्षण में नहीं, वरन् चरित्र निर्माण में है। भारत के लोगों का चरित्र निर्माण तभी हो सकता है जब उनको आत्मनिर्भरता की शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के मूल दर्शन पर आधारित शिक्षा दी जाये, जिसकी चर्चा महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा के अन्तर्गत की है। भारत की प्रचलित शिक्षा पद्धति ऐसे शिक्षित लोगों को हमारे सम्मुख खड़ा कर रही है जिन्होंने

जानकारी के नाम पर ज्ञान के पीपे-के-पीपे पीये हैं। अपने इस ज्ञान के बल पर उनमें अभिमान की भावना जागृत हो गई है जिसके चलते ये पढ़े-लिखे लोग अकड़े हुए हैं। ऐसे लोगों को भारतीय परम्परा के अनुसार शिक्षित नहीं माना जा सकता। शिक्षा ग्रहण करने के बाद हम उस व्यक्ति को पढ़ा-लिखा मान सकते हैं जिसके चरित्र में अस्तेय एवं अपरिग्रह का भाव हो। महात्मा गांधी के विचारों के अनुसार बच्चों को शिक्षा देने के विचार से स्कूल खोलकर कार्य शुरू करने वाले गांधवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र भी केवल ज्ञानार्जन और डिग्री को शिक्षा नहीं मानते। उनका मानना है –

"जीना अलग है
जानकारी के पीपे-पर-पीपे पीना अलग है
चतुर और पढ़े और लिखे
हमने जिस तरफ देखा
उसी तरफ हमें दिखे
x x x x
इसलिए भाई पढ़े लिखे अकड़ो मत
कोरे शब्दों की फाँसी में
हमें जकड़ो मत
हम तो देखेंगे तुम्हारा काम
कि मोटा पहनते हो या नहीं
मोटा खाते हो या नहीं"[19]

मेकॉले ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाकर शिक्षा की जो बुनियाद डाली वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी। विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में जो बोझ दिमाग पर पड़ता है वह असहनीय है। महात्मा गांधी के अनुयायी भवानीप्रसाद मिश्र के अनुसार, "इस कुशिक्षा का उद्गम पूर्व और पश्चिम के गठबन्धन की पवित्र भावना को लेकर नही हुआ था। यही एकमात्र संतोष है। यह शिक्षा तो स्वामी और दास के कृत्रिम संबंध को निभाने की नियत से प्रारंभ की गई थी। आदर्श की यह कमी आज तक भी हमारी शिक्षा प्रणाली को पूर्ववत ही जकड़े हुए है। विश्वविद्यालयों में यद्यपि अब अनेक विषय पाठ्यक्रम में रख दिए गए हैं किन्तु जिस प्रकार गेहूँ के बोरे, गाड़ी में जोते हुए बैल का वजन ही होते हैं उसी प्रकार इनके कारण विद्यर्थियों की असुविधा ही बढ़ी है।"[20] करोड़ों लोगों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना उन्हें गुलाम बनाने जैसा है। इसलिए महात्मा गांधी भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की वकालत करते रहे। कोई भी बालक जितनी सरलता से अपनी मातृभाषा में विचारों को ग्रहण करता है, उतनी सरलता से अन्य भाषा के माध्यम से नहीं

कर पाता है। इसलिए महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा में मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाया है। उनके अनुसार – "मातृभाषा मनुष्य के मानसिक विकास के लिए उसी प्रकार स्वाभाविक है जिस प्रकार माँ का दूध शिशु के शरीर के विकास के लिए। शिशु अपना पहला पाठ माँ से सीखता है। इसलिए बच्चों के मानसिक विकास के लिए उनके ऊपर मातृभाषा के अलावा कोई और भाषा थोपना अपराध समझता हूँ।"[21] उन्होंने अंग्रेजी अथवा अन्य किसी विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम मानने से इनकार किया था। परन्तु भारत में आज भी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा जारी है। जिसे देखकर भवानीप्रसाद मिश्र बेचैन हैं। प्रचलित शिक्षा में अंग्रेजी के वर्चस्व पर अपना क्षोभ प्रकट करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं – "हम आज तक शिक्षा नीति में यह तय नहीं कर पाये कि कैसी शिक्षा देकर देश को बनाना है। हिन्दी-अंग्रेजी में बात को लटकाकर यह भी नहीं बता सके कि अंग्रेजी में शिक्षा कब तक दी जायेगी? हम आज भी अंग्रेजी पढ़ाकर अफसर बना रहे हैं और यही काम ब्रिटिश शासन यहाँ कर रहा था।"[22] इस विदेशी भाषा के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है। उनके मस्तिष्क पर अनावश्यक दबाव डालकर उन्हें रट्टू तोता और नकलची बना दिया है। इसकी वजह से शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति अपनी शिक्षा का सार अपने परिवार तथा जनसाधारण तक पहुँचाने में असमर्थ हो गया है। गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र इस स्थिति को देखकर क्षुब्ध हैं। उनके अनुसार विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने पर व्यक्ति एक दो देशी-विदेशी भाषा सीख जाता है तथा रट-रट कर जानकारी भी हासिल कर लेता है। परन्तु उसकी जानकारी उसके मस्तिष्क की सीमा में सिमट कर रह जाती है। ऐसी पद्धति से शिक्षा ग्रहण करने के बाद व्यक्ति एक ही क्षेत्र में महारत हासिल कर सकता है और वह क्षेत्र है बढ़-चढ़ कर बातें करने का। विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली इस शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"तुम लिखते पढ़ते हो।
तुम्हें एक-दो देशी और विदेशी
भाषाएँ आती हैं
इसलिए तुम जो पढ़ते हो
सो लिखते हो।

x x x x

प्रकृति और प्राकृतिक सभी कुछ
जाना है तुमने पढ़-पढ़के

और अगर कुछ कर सकते हो
तो केवल बातें बढ़-चढ़के !"[23]

महात्मा गांधी चाहते थे भारत का प्रत्येक नागरिक अपने आपको सारे भारत का नागरिक समझे। यह तभी संभव हो सकता है जब प्रत्येक भारतीय एक अंतर्प्रांतीय भाषा सीखे। सारे देश की भाषा हिन्दी ही हो सकती है। इसलिए वे चाहते थे कि विद्यार्थियों को हिन्दी अवश्य सीखनी चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने बुनियादी शिक्षा में हिन्दी की अनिवार्यता पर जोर दिया। कवि भवानीप्रसाद मिश्र भी हिन्दी की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। उनका मानना है कि अगर किसी को उत्तर भारत से दक्षिण भारत और पश्चिमी भारत से पूर्वी भारत में जाना है तो उस व्यक्ति को प्रांत विशेष के व्यक्ति से जोड़ने का काम हिन्दी ही कर सकती है। इसलिए भारत के प्रत्येक नागरिक को हिन्दी अवश्य सीखनी चाहिए –

"यदि हमको उत्तर से दक्षिण,
पश्चिम से पूरब जाना है
तो अनिवार्य सीखना हिन्दी
सबको हो जाता है भाई,"[24]

किसी भी देश के बच्चों के हृदय में राष्ट्र के प्रति प्रेम या राष्ट्रीयता तभी उत्पन्न हो सकती है जब उन्हें मातृभाषा के जरिये शिक्षा मिले। जब तक देश के नौजवान ऐसी भाषा में शिक्षा पाकर उसे पचा न लें, जिसे प्रजा समझ सके, तब तक वे अपने देश की जनता के साथ न तो जीता-जागता सम्बन्ध पैदा कर सकते हैं और न उसे कायम रख सकते हैं। विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के कारण उनके हृदय में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति उसे पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के समक्ष हीन लगने लगती है। यही कारण है कि भारत की दोषपूर्ण प्रचलित शिक्षा पद्धति में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी हमारे नौजवान न तो भारतीय संस्कृति को जानते हैं और न उसे जानने का प्रयत्न करते हैं। उसकी आकांक्षाएँ तो बाहर की है। वह रात-दिन यही सोचता है कि किस तरह यहाँ से बाहर निकल के विदेश जाऊँ। देश की मिट्टी के प्रति उसके हृदय में कहीं कोई लगाव नहीं है। इसका कारण विदेशी माध्यम की शिक्षा है जिसने राष्ट्र की शक्ति हर ली है। शिक्षित व्यक्ति को आम जनता से दूर कर दिया है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो राष्ट्र की आत्मा नष्ट हो जायेगी। इसलिए जल्द-से-जल्द हमें विदेशी शिक्षा को त्याग कर महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा व्यवस्था को अपनाना चाहिए। विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली प्रचलित दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति के दुष्परिणाम को प्रकट करते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"हिन्दुस्तान का पढ़ा-लिखा
सबसे कम जानता है
हिन्दुस्तान को
वह उसे जानना ही नहीं चाहता
क्योंकि आकांक्षाएँ उसकी
बाहर पड़ी है
बाहर किस तरह जा सकते हैं
अभी तो वह यही जानने में लगा है
वह यहाँ की माटी का नहीं
बाहर के सोने का सगा है।"[25]

बुनियादी शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है गांव के बच्चों को सुधार-सँवार कर उन्हें गाँव का आदर्श निवासी बनाया जाये। इसकी योजना गाँव के बच्चों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। प्रचलित शिक्षा पद्धति की स्थिति ठीक इसके विपरीत है। आज जिसे हम प्राथमिक शिक्षा कहते हैं वह तो एक मजाक है; इसमें गाँवों में बसने वाले हिन्दुस्तान की जरूरतों और मांगों का जरा भी विचार नहीं किया गया है। हमारे देश में शिक्षा प्राप्त करने के बाद शिक्षित व्यक्ति का एक मात्र उद्देश्य गाँव को छोड़कर रोजगार की तलाश में शहर जाना होता है। एक बार शहर जाने के बाद शहरी संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित होकर वह किसी भी कीमत पर गाँव में बसने को तैयार नहीं होता। प्रचलित शिक्षा पद्धति से उत्पन्न इसी स्थिति को चित्रित करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"गुलाब का फूल है
हमारा पढ़ा-लिखा
x x x x
सबसे बड़ा सबूत
उसके गुलाब होने का यह है
कि वह गाँव में जाकर
बसने के लिए
तैयार नहीं है"[26]

बुनियादी शिक्षा में बच्चों की रुचि, रूझान, योग्यता एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है। इस दृष्टि से यह शिक्षा बाल-केन्द्रित है। उसका पाठ्यक्रम भी रूढ़ न होकर लचीला होता है। इसलिए इसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों को पर्याप्त स्वतंत्रता रहती है।

यह बच्चों के वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास पर बल देती है, तथा अध्यापकों से इस पद्धति में यह आशा की जाती है कि वे बालकों के साथ प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार करें और उनके वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास में सहयोग प्रदान करें। परन्तु प्रचलित शिक्षा पद्धति में ऐसे शिक्षक बहुत कम देखने को मिलते हैं। आज के अधिकांश शिक्षक हाथ में छड़ी लिए, बात-बात में आँखें तरेरने वाले हैं। प्रचलित शिक्षा पद्धति की इसी खामी को उजागर करने के उद्देश्य से एक ऐसे ही शिक्षक का चित्र प्रस्तुत करते हुए गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं –

"जहाँ नजर पड़ जाये
वहीं पर खड़ा मास्टर
छड़ी हाथ में
बात-बात में आँख लाल
कर लेता है यह"[27]

आज के अधिकांश शिक्षक बुनियादी शिक्षा की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। अच्छे शिक्षक का प्रमुख गुण यह है कि वह हमेशा सीखता रहता है। बिना सीखे वह किसी को कुछ सिखा नहीं सकता। भवानीप्रसाद मिश्र स्वयं एक शिक्षक थे। उन्होंने प्रत्यक्षरूप से जो देखा उसको अभिव्यक्त करते हुए 'शिक्षा की भारतीयता' शीर्षक निबंध में लिखा है – "यदि शिक्षक स्वयं सीख नहीं रहा है तो वह कुछ सिखा नहीं सकता। जो दीपक स्वयं नहीं जल रहा अन्य दीपकों को नहीं जला सकता। शिक्षक अपने विषय की सीमा पर पहुँच गया है। ज्ञान के साथ जिसका प्राणमय यात और आयात नहीं है, जो केवल पाठों का उच्चारण करता है। वह विद्यार्थी के मस्तिष्क को लादता है, स्फूर्ति नहीं देता।"[28] भवानीप्रसाद मिश्र चाहते थे कि भारत में महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा को लागू किया जाये। इस पद्धति के लागू होने पर ही हमें आदर्श शिक्षक मिलेंगे जिनके प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार से बच्चों का वैयक्तिक और सामाजिक विकास होगा।

योग्य शिक्षक का महत्त्व सर्वविदित है। भवानीप्रसाद मिश्र भी 'एक उम्र तक सच' शीर्षक कविता में बच्चे के मानसिक विकास में योग्य शिक्षक के योगदान को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि अच्छे शिक्षक का सानिध्य पाकर बच्चे का व्यक्तित्व पुष्प की भाँति विकसित होता है–

"अच्छे माता-पिता, बहन-भाई,
शिक्षक मिल जायें
तो बच्चे कुछ नहीं छिपाये

फूलों से खिल जायें"[29]

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। यह साधन शुचितापूर्ण और स्वस्थ होगा तो देश का वैचारिक और मानसिक स्वास्थ्य भी स्वस्थ रहेगा। महात्मा गांधी ने भी हस्तकला और उद्योग पर केन्द्रित बुनियादी शिक्षा को महत्त्व दिया था। आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के नाम पर संभवत महज खाना-पूर्ति की जा रही है। किताबी पढ़ाई पर अधिक जोर दिये जाने के कारण बच्चों की पीठ पर बस्तों का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। समाज के शिक्षाविदों को इस बात पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। समाज के कर्णधारों को भी इस दिशा में ठोस पहल करनी होगी। बच्चों पर लादे जाने वाली बोझ की स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र लिखते हैं –

"पढ़ना लिखना बहुत
बढ़ गया है आजकल
मेरा यह दस बरस का
विपिन पीठ पर किताबें
लादकर स्कूल आता जाता है
तो लगता है
यह सब अगर बच्चों को
पढ़ना पड़ता होगा तो
क्या होगा उनके दिमागों का
कुंद हो जाएंगे उनके जहन,
उनमें न हवा जायेगी न धूप"[30]

निष्कर्षतः प्रचलित शिक्षा पद्धति हमें हमारी संस्कृति से दूर कर पतन की और उन्मुख करती है। जबकि भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा की पोषक महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा दस्तकारी के माध्यम से बच्चों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करती है। मातृभाषा को माध्यम बनाकर दी जाने वाली यह शिक्षा बच्चों को देश निर्माण में हाथ बँटाने के लिए प्रेरित भी करती है। घोषित तौर पर गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र भी प्रचलित शिक्षा पद्धति से असंतुष्ट थे। इसलिए उनकी कविताओं में प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरोध का स्वर सुनाई पड़ता है और यह विरोध ही उन्हें महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा के समर्थन में खड़ा कर देता है। उनका मानना है कि प्रचलित शिक्षा पद्धति संस्कृति के लिए संकट पैदा कर मानव जीवन में जहर घोलती है। इस पद्धति से शिक्षा प्राप्त व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातें करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। यह दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति हमारे युवाओं को उनकी संस्कृति से दूर कर राष्ट्र की आत्मा को नष्ट कर रही है।

इसलिए कवि भवानीप्रसाद मिश्र चाहते हैं कि महज खाना-पूर्ति करने वाली इस विदेशी शिक्षा पद्धति को त्याग कर हमें महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा को अपनाना चाहिए।

## (ग) स्त्री-शिक्षा :

भारतीय स्त्री की क्षमता विश्व के किसी उन्नत देश की स्त्री से कम नहीं है। अंतर केवल इतना ही है कि उन्नत देशों में स्त्रियों को पुरुषों के समान सभी क्षेत्रों में समान अवसर प्राप्त होते हैं, वहीं भारतीय स्त्रियों के सामने व्यावहारिक रूप से अवसरों की कमी है। यद्यपि भारतीय संविधान में स्त्री और पुरुषों को समान अधिकार दिए गए हैं, पर व्यवहार में यह बात नहीं है। स्त्री अपने स्वाभाविक अधिकारों का उपभोग तभी कर सकती है, जब उसमें आत्मज्ञान हो। आत्मज्ञान के लिए शिक्षा आवश्यक है। महात्मा गांधी समाज में स्त्री और पुरुष के लिए समान अधिकारों के पक्षधर थे। इसलिए उन्होंने स्त्री शिक्षा को पर्याप्त महत्त्व दिया और स्त्रियों के लिए भी शिक्षा को उतना ही आवश्यक माना है जितना कि पुरुषों के लिए। महात्मा गांधी शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों की मुक्ति में विश्वास रखते थे।

यह सच है कि महात्मा गांधी ने स्त्री-शिक्षा का स्वरूप निर्धारित नहीं किया पर आवश्यकता होने पर स्त्रियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुविधा मुहैया कराने की बात करते हुए 'मेरे सपनों का भारत' में उन्होंने लिखा है - "स्त्रियों की शिक्षा कैसी हो और कहाँ से शुरू हो, इसके विषय में मैं खुद निश्चय नहीं कर सका हूँ। लेकिन यह मेरा दृढ़ मत है कि जितनी सुविधा पुरुष को मिलती है उतनी ही स्त्री को भी मिलनी चाहिए और जहाँ विशेष सुविधा की जरूरत हो वहाँ विशेष सुविधा भी मिलनी चाहिए।"[31] अर्थात् जो स्त्री शिक्षा प्राप्त करना चाहे उसे इसकी पूरी सुविधा मिलनी चाहिए। पर हमारे समाज में महिलाएँ आज भी निरक्षर और अशिक्षित हैं। वे वांछित रूप से अपनी आवाज संसद एवं विधान मंडलों में उठाने में असमर्थ है।

स्त्री और पुरुष दोनों समान दर्जे के हैं, परंतु एक नहीं हैं। प्रकृति ने दोनों को अलग-अलग विशेषताएँ प्रदान की है। भारतीय संस्कृति के अनुसार स्त्री-पुरुष की सहयोगिनी है। घर के भीतरी कामों में स्त्री की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। घर के कार्यों को स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक सफलता पूर्वक कर सकती है। घरों में रहने वाली स्त्रियाँ बच्चे का पालन-पोषण बड़ी दक्षता से करती है और घरेलू गतिविधियों का प्रवंध करती है। इसलिए महात्मा गांधी ने स्त्रियों के लिए विशेष शिक्षा व्यवस्था पर जोर दिया। उनके अनुसार – "स्त्री-शिक्षा की योजना बनाने वाले को यह हमेशा याद रखना चाहिए कि दम्पति के बाहरी कामों में पुरुष सर्वोपरि है और भीतरी कामों में स्त्री की प्रधानता है।"[32] शिक्षा योजना बनाने वाले ने यदि स्त्री या पुरुष की प्रकृति या गुणों को ध्यान में नहीं रखा तो स्त्री और

पुरुष दोनों को अपने-अपने क्षेत्र में अपनी काबिलियत दिखाने का अवसर नहीं मिलेगा। शिक्षा योजना बनाने वाले को स्त्रियों की शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली व्यावाहारिक कठिनाइयों पर ध्यान देना होगा, जो शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर आती है। उन्हें शिक्षा पाठ्यक्रम निर्धारण में स्त्री की स्वाभाविक आवश्यकताओं का ध्यान रखना होगा। पुरुष और स्त्री के लिए एक ही प्रकार के पाठ्यक्रम के निर्धारण से उनका समूचित विकास नहीं होगा। यही कारण है कि महात्मा गांधी ने स्त्रियों के लिए विशेष शिक्षा की बात की है, जिससे गृह व्यवस्था, बच्चों की देखभाल और उनकी शिक्षा वगैरह के विषय में स्त्रियाँ विशेष ज्ञान प्राप्त कर सके। इन कार्यों को स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक कुशलतापूर्वक कर सकती हैं। इसलिए स्त्रियों को अपनी ऊर्जा और क्षमता का उपयोग इन क्षेत्रों में करना चाहिए। उन स्कूल, कॉलेजों में जहाँ लड़कियों और स्त्रियों की संख्या अधिक हो, वहाँ डिजाइनिंग, ड्राइंग, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, मिडवाइफरी, सांख्यिकी, सेनेमाटोग्राफी, घरेलू अर्थ प्रबंध, पुस्तकालय, प्रोसेसिंग, बुजुर्गों की देखभाल, बागवानी और असंख्य ऐसे ही पाठ्यक्रम शुरू किये जाने चाहिए, जो खासतौर से लड़कियों और स्त्रियों के लिए तैयार किये गए हों। अर्थात् प्रत्येक बालिका को शिक्षा के साथ-साथ ऐसी कला सिखाई जाये जिससे वह अपने घर में रहकर ही स्वरोजगार द्वारा अपनी तथा अपने परिवार की जीविका चला सके। अगर ऐसा होता है तो स्त्रियाँ आत्मनिर्भर होंगी, समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और समाज की भी प्रगति होगी। इससे देश अगली शताब्दी की चुनौतियों का सामना कर सकेगा।

महात्मा गांधी स्त्रियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा के विरोधी नहीं थे। वे चाहते थे कि अगर कोई स्त्री अंग्रेजी सीखना चाहती है तो पुरुषों के लिए खोली हुई पाठशालाओं में वह अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार महात्मा गांधी स्त्रियों के लिए समुचित शिक्षा के हिमायती थे पर उनका मानना था कि स्त्री-पुरुष की पूरक है। उसे किसी भी क्षेत्र में पुरुष के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए। प्रतिस्पर्धा के बल पर वह अपनी क्षमता के अनुरूप ऊँचाइयों का स्पर्श नहीं कर सकती।

गांधीवादी विचारधारा को समर्पित भवानीप्रसाद मिश्र का संपूर्ण काव्य गांधीवाद के आदर्शों का प्रतिबिम्ब है। यद्यपि उनकी कविताओं में नई तालीम और बुनियादी शिक्षा की भाँति स्त्री-शिक्षा के स्वरूप पर प्रत्यक्ष रूप से उनके विचार व्यक्त नहीं हुए हैं, पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे स्त्री-शिक्षा के विरोधी थे। उन्होंने स्त्री-शिक्षा के महत्त्व और उपयोग को स्वीकार किया है। भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति अत्यंत दयनीय है। स्त्री जीवन से जुड़ी परम्पराओं के परिणामस्वरूप पनपी सामाजिक समस्याओं का मूल कारण अशिक्षा है।

अशिक्षा के परिणामस्वरूप उपजी दहेज प्रथा स्त्री जीवन के लिए अभिशाप है। स्त्री-शिक्षा के माध्यम से चेतना जागृत करके ही इस समस्या को खत्म किया जा सकता है। दहेज

के अभाव में हमारे देश की अनेक लड़कियाँ या तो अविवाहित रह जाती हैं या फिर आत्महत्या कर लेती हैं। इसके साथ-साथ ससुराल पक्ष द्वारा प्रताड़ित कर उसकी हत्या की घटनाएँ भी देखने को मिलती है। दहेज के अभाव में हाथों में मेहंदी लगाकर मंडप में बैठी दुलहन अपने वैवाहिक जीवन के भविष्य के प्रति आशंकित है और उसका बुरा हाल है। शिक्षा के अभाव में दहेज प्रथा के चलते अपने भविष्य के प्रति आशंकित दुलहन का वर्णन करते हुए कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं -

"गलता का लहँगा पहने
ऐसे में बैठे हो तुम
मेहंदी लगा रखी है पाँव में
जीवन से अब छाँव में
आँखें चार करने की
आस बेअकली है,
इसलिए कहता हूँ
तुम्हारा बुरा हाल है।"[33]

स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत तभी हो सकती है जब वह शिक्षित हो। महात्मा गांधी के अनुसार, "जैसा अधिकार पुरुषों को अपने भविष्य की रचना का है उतना और वैसा अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है।"[34] पर यह तभी संभव है जब स्त्री को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हो। कवि भवानीप्रसाद मिश्र स्त्री जागृति के पक्षधर थे। यही कारण है कि उनकी कविताओं में वर्णित शिक्षाप्राप्त स्त्री रूढ़ियों और बंधनों से छुटकारा पाने के लिए विद्रोह का बिगुल ही नहीं फूँकती बल्कि वह पुरुष प्रधान समाज के पुरुषों से स्वयं को अपने पाँवों पर छोड़ने का आग्रह भी करती है –

"कठपुतली गुस्से से उबली
बोली – ये धागे क्यों है
मेरे पीछे – आगे ?
इन्हें तोड़ दो;
मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो"[35]

निष्कर्षतः स्त्री और पूरुष के लिए समान अधिकारों के समर्थक महात्मा गांधी स्त्रियों के लिए भी शिक्षा को उतनी ही आवश्यक मानते थे जितनी कि पुरुषों के लिए। यह सच है कि उन्होंने स्त्री-शिक्षा का कोई स्वरूप निर्धारित नहीं किया। पर आवश्यकता होने पर वे

शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को विशेष सुविधाएँ देने के पक्ष में थे। गांधीवादी विचारधारा को समर्पित कवि भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रत्यक्ष रूप से तो महात्मा गांधी के स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी विचार दृष्टिगोचर नहीं होते, परन्तु स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को उन्होंने स्वीकार किया है। कवि भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में वर्णित - स्त्री-शिक्षा के अभाव में पनपी - स्त्री-जीवन सम्बन्धी समस्याएँ परोक्ष रूप से स्त्री-शिक्षा की ओर संकेत करती है। भवानीप्रसाद मिश्र स्त्री-जीवन सम्बन्धी इन समस्याओं को स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा देकर खत्म करना चाहते हैं।

## निष्कर्ष :

महात्मा गांधी साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर उसे आत्मनिर्भर बनाये। बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करने के उद्देश्य से उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में नई तालीम की अवधारणा को प्रस्तुत किया जिसमें अक्षर ज्ञान की अपेक्षा श्रम के महत्त्व की वकालत की गई है। वे हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा देने के पक्षधर थे। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ अक्षर ज्ञान से पहले औजार चलाना सिखाना चाहिए जिससे बालक श्रम को हेय न समझे। महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की अभिव्यक्ति सैद्धान्तिक तौर पर भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में देखने को नहीं मिलती, फिर भी प्रचलित शिक्षा पद्धति का विरोध और उनकी खामियों को उजागर करने वाले अनेक उदाहरण इनकी कविताओं में देखे जा सकते हैं। केवल मन को बलवान कर पढ़े लिखे जीव-जंतुओं की कतार खड़ी करने वाली प्रचलित शिक्षा पद्धति के प्रति अपना रोष प्रकट करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र शिक्षा की नई पद्धति का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास शिक्षा की नयी पद्धति नई तालीम से ही संभव है।

महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा दस्तकारी के माध्यम से बच्चों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करती है। इसका पाठ्यक्रम बच्चों की योग्यता एवं रुचि को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। महात्मा गांधी ने बुनियादि शिक्षा में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया है क्योंकि इससे विचारों को ग्रहण करना सरल होता है। भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा की पोषक महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा बच्चों को देशनिर्माण में हाथ बँटाने के लिए भी प्रेरित करती है। गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र प्रचलित शिक्षा पद्धति से असंतुष्ट थे। इसलिए उनकी कविताओं में प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरोध का स्वर सुनाई पड़ता है। उनके अनुसार हमें हमारी संस्कृति से दूर करने वाली प्रचलित शिक्षा पद्धति ही हमारे पतन का मूल कारण है। विदेशी भाषा में शिक्षा ग्रहण करने के बाद व्यक्ति अपनी शिक्षा का सार अपने परिवार तथा जनसाधारण तक पहुँचाने में असमर्थ रहता है। इसलिए कवि भवानीप्रसाद मिश्र हिन्दी की

अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली प्रचलित शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कवि कहते हैं कि इस पद्धति से शिक्षा ग्रहण करने के बाद व्यक्ति बढ़-चढ़ कर बातें करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। उसकी यह शिक्षा का देश और समाज के किसी काम की नहीं है। महात्मा गांधी स्त्री-शिक्षा को आवश्यक मानते थे क्योंकि इसके बिना स्त्री अपने स्वाभाविक अधिकारों का उपभोग नहीं कर सकती है। कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने भी स्त्री-शिक्षा के महत्त्व और उपयोग को स्वीकार किया है। उनका मानना है कि स्त्री-शिक्षा के माध्यम से चेतना जागृत करके ही स्त्री-जीवन से जुड़ी सामाजिक समस्याओं और कुप्रथाओं को खत्म किया जा सकता है।

इस प्रकार भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी कविताओं में शिक्षित वर्ग की दुर्दशा को वर्णित कर वर्तमान पतन की अवस्था से उबरने के लिए नई तालीम और बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसके साथ-साथ स्त्रियों के विकास के लिए स्त्री-शिक्षा को भी वे आवश्यक मानते हैं। इसप्रकार महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी सर्वमान्य विचार भवानीप्रसाद मिश्र के विचार बनकर उनकी कविताओं में अभिव्यक्त हुए हैं।

**XXXX**

## संदर्भ ग्रंथ सूची :


[1] महात्मा गांधी, हरिजन, हरिजन सेवक ट्रस्ट, पूना, 31-07-1937, पृ. सं. – 197

[2] महात्मा गांधी, यंग इण्डिया, अहमदाबाद, 01-09-1921, पृ. सं. – 277

[3] महात्मा गांधी, हरिजन, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 10-03-1946, पृ. सं. – 38

[4] महात्मा गांधी, हरिजन, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 01-09-1946, पृ. सं. – 286

[5] विजय बहादुर सिंह (सं), भवानीप्रसाद मिश्र रचनावली, अनामिका पब्लि. एंड डिस्ट्री., 2002, खण्ड – 7, तमाशे अभिव्यक्ति के, पृ. सं. – 151

[6] वही, खण्ड – 8, शिक्षा की भारतीयता, पृ. सं. – 361

[7] वही, खण्ड – 7, जलवा चीजों का, पृ. सं. – 229

[8] वही, खण्ड – 2, केवल क्षण की बातें करके, पृ. सं. – 111

[9] वही, खण्ड – 2, धूल के या मूल के, पृ. सं. – 474

[10] वही, खण्ड – 1, अमृत पथ, पृ. सं. – 320

[11] महात्मा गांधी, हरिजन, हरिजन सेवक ट्रस्ट, पूना, 15-05-1935, पृ. सं. – 28

[12] विजय बहादुर सिंह (सं), भवानीप्रसाद मिश्र रचनावली, अनामिका पब्लि. एंड डिस्ट्री., 2002, खण्ड – 2, सेवाग्राम, पृ. सं. – 422

[13] वही, खण्ड – 1, पत्र साम्यवादी मित्र को, पृ. सं. – 282

[14] वही, खण्ड – 4, उन्हें हक है, पृ. सं. – 302

[15] वही, खण्ड – 8, शिक्षा की भारतीयता, पृ. सं. – 361

[16] वही, खण्ड – 4, क्या करते रहते हैं, पृ. सं. – 47

[17] वही, खण्ड – 4, क्या करते रहते हैं, पृ. सं. – 49

[18] वही, खण्ड – 2, बैठी ठाली रायें, पृ. सं. – 117

[19] वही, खण्ड – 2, जीना और जानकारी, पृ. सं. – 123

[20] वही, खण्ड – 8, शिक्षा की भारतीयता, पृ. सं. – 361

[21] भारतम कुमारप्पा (संपादक), मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन : एम. के. गांधी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1954, पृ. सं. – 8

[22] कृष्णदत्त पालीवाल, भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य संसार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृ. सं. – 167

[23] विजय बहादुर सिंह (सं), भवानीप्रसाद मिश्र रचनावली, अनामिका पब्लि. एंड डिस्ट्री., 2002, खण्ड – 2, तुम लिखते-पढ़ते हो, पृ. सं. – 114

[24] वही, खण्ड – 1, हिन्दी भाषा, पृ. सं. – 17

[25] वही, खण्ड – 3, डायरी के पन्नों से, पृ. सं. – 284

[26] वही, खण्ड – 4, आमीन गुलाब पर ऐसा वक्त कभी न आये, पृ. सं. – 129

[27] वही, खण्ड – 7, जल्दी आओ, पृ. सं. – 34

[28] वही, खण्ड – 8, शिक्षा की भारतीयता, पृ. सं. – 363

[29] वही, खण्ड – 7, एक उम्र तक सच, पृ. सं. – 52

[30] वही, खण्ड – 2, संस्कृति का मोर्चा, पृ. सं. – 176

[31] महात्मा गांधी, मेरे सपनों का भारत, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2010, पृ. सं. – 170

[32] वही, पृ. सं. – 195

[33] विजय बहादुर सिंह (सं), भवानीप्रसाद मिश्र रचनावली, अनामिका पब्लि. एंड डिस्ट्री., 2002, खण्ड – 2, हँसती हुई तसवीरें, पृ. सं. – 440-441

[34] महात्मा गांधी, मेरे सपनों का भारत, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2010, पृ. सं. – 188

[35] विजय बहादुर सिंह (सं), भवानीप्रसाद मिश्र रचनावली, अनामिका पब्लि. एंड डिस्ट्री., 2002, खण्ड – 2, कठपुतली, पृ. सं. – 237

**xxxx**